Course - M.A, Education,Part -1

Paper-- 3rd, Philosophical foundation of Education

Prepared by-- Dr Meena Kumari

Topic- Need and Scope of Philosophy

दर्शन की आवश्यकता तथा क्षेत्र

(1) प्रस्तावना :--- दर्शन की आवश्यकता जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में होती है ।जीवन के कार्यों को सार्थकता प्रदान करने में दर्शन का बहुत बड़ा योगदान है ।शिक्षा हो या जीवन सभी के प्रश्नों का अंतिम उत्तर दर्शन में ही निहित है ।दर्शन ,शिक्षा का मार्गदर्शन करता है और शिक्षा उन्हें उपलब्ध कराकर छोड़ती है। अतः जहां शिक्षा एक प्रयोगशाला है ,वहां दर्शन के सिद्धांतों तथा चिंतन की परीक्षण की जाती है ।

(2)दर्शन की आवश्यकता

जीवन और शिक्षा दोनों के लिए दर्शन की आवश्यकता बहुत महत्वपूर्ण है जो निम्न वत है:---

१) जीवन के लिए दर्शन की आवश्यकता:--- जीवन के लिए दर्शन का होना अति आवश्यक है क्योंकि दर्शन द्वारा जीवन को उपयोगी बनाया जाता है। प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह विद्वान हो या मूर्ख जो भी हो उसका जीवन के प्रति एक दृष्टिकोण होता है ।जिसके तहत वे अपना जीवन व्यतीत करते है। दर्शन व्यक्ति को विभिन्न गुणों की प्राप्ति एवं अवगुणों के त्याग, रहन-सहन की विशेष तरीके एवं विशेष कार्यों को रोकने में उपयोगी एवं आवश्यक होता है। दर्शन के द्वारा ही मनुष्य अपने सही लक्ष्य तक पहुंच पाता है ।अतः जीवन के लिए दर्शन बहुत महत्वपूर्ण है।

२) शिक्षा के लिए दर्शन की आवश्यकता :--- दर्शन, शिक्षा का एक प्रमुख आधार है ।दर्शन द्वारा शिक्षा के उद्देश्य ,पाठ्यक्रम ,शिक्षण विधि ,विद्यालय संगठन ,अनुशासन, पाठ्यक्रमों का निर्धारण ,शिक्षक की भूमिका ,छात्र शिक्षक में संबंध तथा मूल्यांकन इत्यादि को एक निश्चित रूप दान किया जाता है ।अतः

किसी भी शैक्षिक प्रक्रिया को सफल बनाने के लिए दर्शन का होना अति आवश्यक है। इसलिए शिक्षा के विभिन्न अंग दर्शन से प्रभावित रहते हैं।

३) दर्शन एवं शिक्षा के उद्देश्यः--- शिक्षा ,जीवन के उद्देश्यों को तय करती है तथा दर्शन जीवन के के लक्ष्य को निर्धारित करने में सहायता प्रदान करती है ।जीवन के लक्ष्य शिक्षा के उद्देश्यों को निर्धारित करते हैं ।इस तरफ से जीवन, दर्शन तथा शिक्षा एक दूसरे से संबंधित है ।जिस तरह का जीवन का दर्शन होगा उसी तरह क्या शिक्षा का स्वरूप होगा।जीवन के प्रति दृष्टिकोण देश एवं समय की विचारधाराओं के द्वारा परिवर्तित होते रहता है ।उसी के अनुकूल शिक्षा के उद्देश्य बदलते हैं ।शिक्षा जीवन के लक्ष्यों के अनुरूप अपने उद्देश्यों का निर्माण करती है ,उदाहरण स्वरूप वैदिक काल में शिक्षा का उद्देश्य जहां मोक्ष था ,वही वर्तमान युग में शिक्षा का उद्देश्य धन उपार्जन से है। शिक्षा की प्रत्येक योजना व्यवहारिक दर्शन और जीवन के प्रत्येक बिंदु को आवश्यक रूप से स्पर्श करती है ।अतः शिक्षा के कई उद्देश्य जो निश्चित रूप से प्रदर्शन करने के लिए पर्याप्त रूप से स्थूल है जीवन के आदर्शों से संबंधित होते हैं । जीवन के आदर्श सर्वप्रथम सर्वथा भिन्न होते हैं इसीलिए उनकी शैक्षिक सिद्धांतों में अंतर आवश्यक प्रतिबिंबित होती है ।इस प्रकार से शिक्षा के विभिन्न उद्देश्यों को जीवन के विभिन्न साधनों से जोड़ कर देखा जा सकता है। इसलिए समय के साथ दर्शन में भी बदलाव देखने को मिलता है तथा शिक्षा के उद्देश्य भी बदलते रहते हैं।

४) दर्शन एवं पाठ्यक्रम :--- शिक्षा के उद्देश्यों को पूर्ति का एक महत्वपूर्ण साधन पाठ्यक्रम होता है । यह शिक्षा के उद्देश्य पर आधारित होता है ।शिक्षा क्रम में हम वैज्ञानिक विषयों की प्रधानता दे या सांस्कृतिक विषयों को, इसमें क्रियात्मक शिक्षा को स्थान दिया जाए या नहीं ,ये भी बातें दार्शनिक दृष्टिकोण से प्रभावित होती है। सामग्री के चयन के साथ ही उसके संगठन में भी हमें दर्शन का प्रभाव दिखता है जैसे कि पाठ्यक्रम बाल केंद्रित हो या शिक्षक केंद्रित इसका निर्णय भी दर्शन के द्वारा ही होता है । दर्शन आध्यात्मिक विचारधारा, शास्त्र तथा धर्म शास्त्र को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने पर बल देती है ।आदर्शवादी दर्शन पाठ्यक्रम में मानवीय विचारों एवं मूल्यों को अधिक महत्व देता है ,वहीं प्रकृतिवाद दार्शनिक विचारधारा बाल केंद्रित शिक्षा पर अधिक बल देती है क्योंकि प्रकृतवादी दार्शनिक बालक के स्वतंत्र विकास पर बल देती है ।प्रयोजनवाद विचारधारा उपयोगिता को आधार मानकर पाठ्यक्रम का निर्माण करती है। यह देखा जाता है कि दर्शन के आधार पर ही पाठ्यक्रमों का निर्धारण किया जाता है।

५) दर्शन एवं शिक्षण विधियां:--- पाठ्यक्रम की तरह शिक्षण विधियां भी विभिन्न तरह के दर्शनों पर आधारित होता है। अलग-अलग दार्शनिकों ने अलग-अलग शिक्षण विधियों का प्रतिपादन किया है, उदाहरण स्वरूप सुकरात ने प्रश्नोत्तर विधि, अरस्तू ने आगमन निगमन विधि, बेकन ने प्रयोग एवं निरीक्षण विधि तथा रूसो ने बाल केंद्रित विधि का जन्म दिया है। आदर्शवादी जहां व्याख्यान एवं प्रश्नोत्तर विधि को उपयुक्त मानते हैं तो प्रकृति वादी बच्चों के प्रशिक्षण पर जोर देते हैं ।प्रयोजनवाद क्रिया विधि को उपयुक्त समझते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि जिस दर्शन के सिद्धांतों का जैसा स्वरूप है उसके अनुसार ही शिक्षण विधियों का निर्माण किया गया है ।मोंटेसरी इद्रिय के प्रशिक्षण पर बल दिया है तो फ्रोबेल ने किंडर गार्डन पद्धति को जन्म दिया है। इस प्रकार भिन्न भिन्न शिक्षा शास्त्रियों तथा अलग-अलग दर्शन ने अलग-अलग शिक्षण विधियों की वकालत की है।

६) दर्शन तथा अनुशासन:-- शिक्षा के अन्य अंगों में अनुशासन एक महत्वपूर्ण अंग है.! इस पर भी दर्शन का बहुत अधिक गहरा प्रभाव देखा गया है! किसी देश की दार्शनिक एवं राजनीतिक विचारधारा अनुशासन के स्वरूप को निश्चित करती है! उदाहरण स्वरूप स्पार्टा का मुख्य उद्देश्य देश की रक्षा करना था , तो वहां के विद्यालय में सैनिक अनुशासन था !प्रकृतिवादी दर्शन में बच्चों के विकास के लिए किसी भी प्रकार के नियंत्रण की आवश्यकता नहीं माना गया है ।अतः प्रकृति वादी मुक्ततात्मक अनुशासन की वकालत करती है ।आदर्शवादी प्रयोगात्मक अनुशासन पर बल देते हैं तो कुछ अध्यात्मवादी इद्रिय नियंत्रण के लिए दमनात्मक अनुशासन को उपयुक्त मानते हैं ।प्रयोजनवादी भी आत्म नियंत्रण के पक्षपाती हैं ।उनके अनुसार बालक का आचरण सामाजिक परिवेश के द्वारा नियत्रित होना चाहिए । इसलिए प्रत्येक दर्शन का अनुशासन के संबंध में दृष्टिकोण अलग अलग होता है।

७)दर्शन और शिक्षक :--- विभिन्न दर्शन में शिक्षक की भूमिकाओं को भी बदलते हुए देखा गया है। दार्शनिक विचार धाराओं में परिवर्तन के साथ ही विद्यालय में शिक्षक की भूमिका बदलती रहती है, क्योंकि दर्शन ही शिक्षा में शिक्षक के स्थान को निर्धारित करती है । आदर्शवादी विचारधारा शिक्षक को भगवान का दर्जा देते हैं वही प्रकृतिवादी विचारधारा शिक्षक का स्थान पर्दे के पीछे मानती है।आदर्शवादियों के अनुसार विद्यालय में शिक्षकों का स्थान बहुत ही महत्वपूर्ण है, वही प्रकृति वादी शिक्षक को सामाजिक वातावरण के निर्माण के रूप में देखता है ।इससे स्पष्ट है कि दर्शन के बदलते ही विद्यालय का स्वरूप तथा शिक्षकों की भूमिका भी बदल जाती है।

८) दर्शन एवं पाठ्य पुस्तकें :--- पाठ्यक्रम के समान ही पाठ्य पुस्तकों पर भी दर्शन का गहरा प्रभाव होता है ।पाठ्यपुस्तक के चयन एवं निर्माण जीवन की मान्यताओं ,आदर्शों एवं सिद्धांतों का ध्यान रखा जाता है क्योंकि इनके द्वारा जीवन के मापदंडों की स्थापना की जाती है ।यह शिक्षण विधियों को भी प्रभावित करती हैं! 3जिन पुस्तकों में जीवन के आदर्शों को प्रतिबिंबित किया जाता है उन्हें उपयुक्त पाठ्य पुस्तकों की श्रेणी में रखा जाता है !इस प्रकार पाठ्य पुस्तकों के निर्माण एवं उसकी उपयोगिता का आधार दर्शन हीं है। इसलिए पाठ पुस्तकों के निर्माण में दर्शन महत्वपूर्ण योगदान देती है ।

९)दर्शन एवं शैक्षिक प्रशासन :-- विद्यालय के संगठन तथा प्रशासन में भी दर्शनशास्त्र का महत्वपूर्ण प्रभाव रहता है। दर्शन समाज की मान्यताओं तथा आदर्शों का विश्लेषण करके उसके लिए मार्गदर्शक सिद्धांत निश्चित करती है ।विद्यालय का शासक या शासन किसके हाथ में हो ,शिक्षा पर राज्य का नियंत्रण हो अथवा नहीं ?इन प्रश्नों का उत्तर दर्शन द्वारा ही संभव है! यदि समाज व्यक्तिवादी दर्शन में आस्था रखता है तो वह शिक्षा को एक एक्छिक संगठन के हाथ में रखेगा, यदि समाज समाजवादी विचारधारा में विश्वास करता है तो वह समाज या राज्य का शिक्षा पर पूर्ण नियंत्रण चाहेगा ।विद्यालय की आंतरिक व्यवस्था का निर्धारण समाज के दर्शन पर निर्भर है, यदि समाज लोकतांत्रिक दर्शन में आस्था रखता है तो विद्यालय की आंतरिक व्यवस्था भी लोकतांत्रिक होगी तथा प्राचार्य का दृष्टिकोण भी लोकतांत्रिक मूल्यों से प्रभावित रहेगा। यदि समाज अधिनायकवाद होगा तो आंतरिक प्रशासन का दृष्टिकोण भी अधिनायक वादी दृष्टिकोण पर आधारित होगा।

(3)दर्शन के क्षेत्र

दर्शन का विषय क्षेत्र बहुत ही व्यापक है ।अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से दर्शन के क्षेत्रों को मुख्यतः तीन भागों में विभाजित किया गया है:---

1) तत्व मीमांसा:---- इसका अर्थ होता है की सत्य की खोज संबंधित क्षेत्र या तत्व ज्ञान (मेटाफिजिक्स)।जीवन की सत्यता क्या है। मरने के बाद आत्मा का क्या होता है।क्या यह दुनिया सत्य है? या इससे परे भी कोई दुनिया है,इसका समस्त सत्य तत्व मीमांसा में जानने की कोशिश की गई हैं।

**आत्मा संबंधी तत्व ज्ञान --- आत्मा क्या है? आत्मा तथा शरीर का संबंध क्या है ? यथार्थ से अलग भी एक दुनिया है, उस का क्या अस्तित्व है ?जन्म मरण क्या है? इन सभी तथ्यों का ज्ञान आत्मा संबंधी तत्व मीमांसा के अंतर्गत हासिल किया जाता है।

**ईश्वर संबंधी तत्वज्ञान -- ईश्वर का स्वरूप, उसका अस्तित्व, प्रमाण आदि प्रश्नों का विवेचन किया जाता है

**सृष्टि शास्त्र :--क्षेत्र में हमें खोजने का प्रयास करते हैं कि सृष्टि की उत्पत्ति किस प्रकार से हुई है तथा इसका भविष्य क्या है!

**ब्रह्मांड विज्ञान-- ब्रह्मांड की रचना किस भौतिक तत्वों से हुई है ?क्या ब्रह्मांड एक है ?आध्यात्मिक है या भौतिक इन प्रश्नों का विचार भी ब्रह्मांड विज्ञान के अंतर्गत किया जाता है।

**सत्ता विज्ञान -- इस क्षेत्र में ब्रह्मांड के नश्वरता तथा इनके अन्य तथ्यों के बीच के संबंधों की विवेचना की जाती है।

2) ज्ञान मीमांसा ---ज्ञान के स्रोत क्या है? ज्ञान की सीमाएं क्या है ?सत्य क्या है? भ्रम क्या है? अर्थात ज्ञान मीमांसा में ज्ञान की समस्त संभावनाओं ,उसके प्रकार इसके ज्ञान के उपलब्ध कराने के साधन इत्यादि का विश्लेषण किया जाता है। दर्शन एक मूलभूत शाखा है ।जिसमें सत्य ,असत्य, प्रमाण, ब्रह्म ज्ञान की सीमा ,ज्ञान की प्रकृति आदि का दार्शनिक विवेचन किया जाता है ।ज्ञान के अन्य शाखाओं के समान शिक्षा शास्त्र में प्रमाणशास्त्रीय सत्य यह बतलाता है कि अंत में हमारा ज्ञान मानवीय ज्ञान है और हमारी ज्ञानात्मक संरचना सीमित है।
3) मूल्य मीमांसा:---- दर्शन में मूल्य शास्त्र एक प्रमुख क्षेत्र है । जिन विषयों का संबंध मानव जीवन के मूल्यों ,उद्देश्यों एवं आदर्शों से होता है उनका विश्लेषण मूल्य शास्त्र में किया जाता है।शुभ,सत्य और सौंदर्य के मूल्यों को लेकर मूल्य की तीन शाखाएं बनाई है जो निम्न वत है ---
१) तर्कशास्त्र--- लॉजिक शब्द यूनानी शब्द लोगोस से लिया गया है जिसका अर्थ है शब्दों या बाद बाद में तर्क की अभिव्यक्ति ।दर्शन वास्तविक रूप में तर्कपूर्ण विवेचन ही है ।आगमन और निगमन विधि

तर्कशास्त्र में सम्मिलित की जाती है ।तर्कपूर्ण चिंतन ,कल्पना अनुमान और तर्क की विभिन्न पद्धति दर्शन के प्रमुख हैं

२) नीति शास्त्र-- एथिक्स शब्द इथेस शब्द से से निकला है जिसका अर्थ है चरित्र ।इसके अंतर्गत मनुष्य के आचरण का विश्लेषण किया जाता है। नीतिशास्त्र आज परम शुभ का विज्ञान है ।यह मानव जीवन के आदर्शों का अध्ययन करता है कि क्या होना चाहिए और क्या नहीं!

३) सौंदर्यशास्त्र ;-+- इस शास्त्र के विवेचन से सुंदरता पर केंद्रित है वस्तुतः सुंदरता क्या है? इसके मापदंड क्या है ? असुंदर और सुंदर कहने के लिए किन लक्षणों का होना जरूरी है। सौन्दर्य शास्त्र से संबंधित सभी प्रश्नआे का उत्तर हेतु चिंतन मनन की प्रक्रिया के लिंए इस क्षेत्र में विवेचना की जाती है।

इस प्रकार शिक्षा का क्षेत्र बहुत व्यापक है।